पानी रे पानी

राजेश मेहरा
नई दिल्ली

पानी का नाम लेते ही मन में एक भाव आता है कि यदि यह ना होता तो क्या होता ?

गर्मी हो या सर्दी पानी की आवश्यकता हर मौसम में समान ही होती है लेकिन यदि गर्मियों का मौसम हो और पानी ना मिले तो ऐसा लगता है कि जान अब गई।

पानी के बिना जीवन की कल्पना करना भी अकल्पनीय है।

हमारा खुद का शरीर ही 75% पानी से बना है तो हम पानी की महत्ता को समझ सकते हैं। यदि पानी ना हो तो मनुष्य का अस्तित्व ही मिट जाएगा। किसी बुद्धिजीवी ने कहा भी है कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिये हो सकता है। पानी प्रकृति की दी हुई वो देन है जिसे पैसों में नहीं आंका जा सकता। तो क्या हमारा दायित्व नहीं बनता कि हम पानी को एक कीमती और ना मिलने वाली वस्तु की तरह इस्तेमाल करें?

लेकिन शायद नहीं, हम ऐसा नहीं करते क्योंकि हमें ये आसानी से और शायद ना के बराबर कीमत में मिल जाता है उन लोगों को जो शहर में रहते हैं लेकिन उन लोगों के बारे में सोचिये जिनको पानी के लिये रोज जद्दो जहद करनी पड़ती है। ये उन लोगों के लिये रोज कुऑ खोदने और रोज पानी पीने जैसा है। आओ हम अभी से प्रण करें कि पानी का सही और अपनी आवश्यकता अनुसार ही इस्तेमाल करें। यदि हम जीवन में पानी के इस्तेमाल करने के नियम बना लें तो शायद हम इस जीवन में प्रकृति का कुछ ऋण उतार सकें और आने वाली पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित कर सकें, क्योंकि जल है तो कल है।

शहरी जीवन में पानी की सबसे ज्यादा आवश्यकता हेती है। तो क्यों ना हम कुछ ऐसा करें कि पानी की खपत भी कम हो और हमारी जरूरत भी पूरी हो जाए। हम निम्न तरीके इस्तेमाल करके पानी की बचत कर सकते हैं और यह संभव है:–

- हम जो पानी गिलास या बोतल में पीते हैं और थोड़ा पीकर ही उसमें छोड़ देते हैं जो कि पानी की बार्बादी है। ऐसा ही लोग उन पानी की बोतलों में करते हैं जिनको वो दुकान से खरीदते हैं। यदि आपको लगता है कि पानी बच गया है तो उसे फ्लश के लिए या फिर वाशिंग मशीन में डाल दें जिससे कि वो इस्तेमाल हो सके। यदि आप घर से बाहर हैं तो बचे पानी को किसी पेड़ या पौधे में डाल दें।
- सुबह टॉयलेट के बाद फ्लश का इस्तेमाल ना करें बल्कि बाल्टी से टॉयलेट पॉट को फ्लश करें इससे 50% बचत होगी।
- दांत साफ करने, शेविंग करने, हाथ धोने या मुँह धोने के लिये चलते नल के पानी का इस्तेमाल ना करें अपितु मग में
  पानी इस्तेमाल करें। सोच कर ही मन रोमांचित हो उठता है कि हम कितना पानी व्यर्थ कर रहे थे और अब कितना पानी बचा सकते हैं।
- हो सके तो थूकने के लिये टॉयलेट पॉट का इस्तेमाल करें ताकि जो पानी हम वॉशबेसिन में मुँह धोने या हाथ धोने के
  लिए इस्तेमाल करें उसे इक्ठ्ठा करके हम फ्लश के लिये या फिर पौधों में डालने के लिये इस्तेमाल कर सकें। उफ पानी

की ऐसे भी बचत हो सकती है यही सोच रहे होंगे आप। अरे भई! जापान में तो वॉशबेसिन टॉयलट पॉट के ऊपर ही बना होता है ताकि उसका पानी सीधा ही फ्लश के काम आ सके। है ना पानी बचाने का नया तरीका?

- आर.ओ. सिस्टम से निकलने वाले पानी से हम कपड़े भी धो सकते हैं जिसको कि हम फ्लश में भी इस्तेमाल करते हैं। करते हैं ना?
- बर्तनों को साफ करने के लिए डिशवाशर की जगह हाथों से साफ कर सकते हैं ताकि पानी कम खर्च हो और एक्सरसाइज अलग से।
- कई बार जब हम आर.ओ. से किसी बोतल को फ्रिज में रखने के लिये भरते हैं तो उसमें पहले से बचे पानी को व्यर्थ ही फेंक देते हैं। ऐसा ना करें उस पानी को वाशिंग मशीन में डाल दें या हाथ धोने के लिए इस्तेमाल करें। करके देखिए अच्छा लगेगा।
- जब भी नहाएं चलते नल के पानी से या फव्वारों के नीचे ना नहायें बल्कि बाल्टी और मग से नहाये । करके देखो उसका मजा ही अलग है। पानी बचेगा। यदि और पानी बचाना है तो रोज सुबह जहाँ दस मग पानी से नहाते हो रोज एक मग पानी कम इस्तेमाल करो। है ना नया तरीका पानी बचाने का?
- ए.सी. और फ्रिज से निकलने वाले पानी को व्यर्थ ना जाने दें उसे इकट्ठा करें और फ्लश आदि के लिये इस्तेमाल करें।
- पानी की लीकेज कहीं भी दिखे उसे तुरंत ठीक करें यह नहीं कि कल कर देंगे या परसों कर देंगे। एक–एक बूंद कीमती है। पानी की बचत ही उसका उत्पादन है। केवल बचत करके ही हम जल संरक्षण में हाथ बंटा सकते हैं।
- सर्दियों में सप्ताह में एक दिन साबुन से ना नहायें, कम पानी लगेगा। करके देखो बहुत सकून मिलता है, जब पानी की बचत होती है।
- सब्जियों और फलों को पानी से धोने से पहले कपड़े से साफ कर लें और फिर पानी से धोएं तथा उस गंदे पानी को पोधों में डालें या फिर फ्लश के लिये इस्तेमाल जरूर करें । पानी की डबल बचत होगी।
- कार या टू व्हीलर को पानी से धोने से बचाने के लिये कवर करके रखें और यदि धोना ही पड़े तो बाल्टी और मग में पानी लेकर धोयें । गाड़ी को ऐसी जगह पार्क करें जहॉ उस पर धूल ना जमे।
- कपड़े हफ्ते में एक या दो बार ही इकट्ठे करके धोयें। हो सके तो कपड़ों को ज्यादा दिन पहनें ताकि धोने में पानी की बचत हो। बाशिंग मशीन के पानी को फ्लश के लिए इस्तेमाल में लें। पानी जरूर बचेगा।
- ओवरहेड टैंक्स में पानी भरने पर बजने वाले बजर लगवाने चाहिए ताकि ओवरफ्लो होने से बच सकें और पानी की बर्बादी न हो।

शहरों में पानी का मीटर जरूर लगवायें और हर महीने प्रण लें कि अगली बार कम पानी इस्तेमाल करेंगे।

करके दखिए पानी बचाना अच्छा लगेगा। सोचिये जो पानी बचेगा उससे कितने लोगों, जानवरों और पक्षियों की प्यास बुझेगी।

बचत के साथ हम पानी को स्टोर भी करें मैं बात कर रहा हूँ बरसाती पानी की, क्योकि यह वह पानी है जिसकी हम कीमत नहीं पहचानते। फ्री मिलता है हमें इसलिए। यदि यही पानी सही तरीके से स्टोर किया जाए या इस्तेमाल किया जाए तो हम कम से कम दो महीने तक इस पानी को नहाने, धोने पौधो की सिंचाई इत्यादि के लिए इस्तेमाल कर सकते है।

बरसात के पानी के संचयन के कई तरीके हैं। एक जो सबसे अच्छा तरीका है कि जब हम अपना कोई भवन या मकान बनवाएं तो उसमें बरसात के पानी को बचाने के लिए इंतजाम हो। जैसे कि हम सुनिश्चित करें कि बरसात का पानी जमीन के अंदर ही जाए और वह पक्की सड़क या फर्श पर बेकार ही व्यर्थ ना हो। उससे जमीन का जलस्तर बढ़ेगा और हैण्डपम्प तथा तालाबों में पानी उपलब्ध रहेगा। एक तरीका और है, हम लोग बरसात के पानी को बड़ी प्लास्टिक की टंकियों या कंटेनर में भरकर सुरिक्षत रख सकते हैं। यदि पानी ढका रहेगा तो बहुत दिन चलेगा और उसको हम रोजमर्रा की जरूरतों के लिए इस्तेमाल कर सकते है।

जागरूकता फैलाकर भी हम पानी की बचत कर सकतें है।

सबसे ज्यादा पानी घर की गृहणी बचा सकती है, इसके लिए मोहल्लों, सोसाइटियों और कालोनियों में जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए। इन सब में महिलाओं की सबसे ज्यादा भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। शहरों में जहां पानी सप्लाई किया जाता है वहां पर मोहल्ले वाइज पानी बचत की प्रतियोगिताएं आयोजित की जानी चाहिए और पानी बचत में प्रथम आने वाले मोहल्ले और कॉलोनी को इनाम दिया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोग जागरूक हों।

सबसे ज्यादा प्यार पानी से बच्चे करते हैं और ये सत्य भी है कि बच्चे ही अपने चुलबुलेपन और बचपने से पानी को व्यर्थ बर्बाद भी करते हैं। हमें बच्चों को बचपन से ही सिखाना चाहिये कि पानी की बचत कैसे करें। उन्हें पानी की महत्ता कहानियों, कविताओं या फिर फिल्मों द्वारा बतानी चाहिए। उनको सुबह टॉयलेट जाने से लेकर नहाने और दांत साफ करने तक में पानी कैसे बचाएं या उसका सही इस्तेमाल कैसे करें, उस बारे में बताना चाहिए।

उनको स्कूल बैग, शूज, कॉपी, पेन पेंसिल इत्यादि सामान ऐसा देना चाहिए जिसमें पानी की महत्ता को दर्शाते चित्र या स्लोगन हों। बच्चों को हमेशा पानी की बचत की आदत रहे इसलिये उनके कमरे में पानी से सम्बंधित चित्र या स्लोगन भी लगाए जा सकते हैं।

उनकी स्कूल की पानी की बोतल पर हमेशा पानी बचाइए का स्लोगन लिखवाएं।

स्कूल में बच्चों को बेवजह पानी बर्बाद न करने दिया जाए ऐसा सुनिश्चित करना चाहिए।

पानी को जल देवता कहा गया है। अतः यही समय है कि हम जल संरक्षण करें और जल देवता को नाराज न होने दें यदि जल देवता नाराज हो गए तो हम भी नहीं बचेंगे।

हम जितना कम पानी इस्तेमाल करेंगे और बचाएंगे उतना ही जमीन से कम पानी निकालना पड़ेगा। जितना कम पानी का दोहन होगा उतना ही पर्यावरण संतुलन ठीक रहेगाा। पेड़ों की जड़ों को ज्यादा पानी मिलेगा और वो ज्यादा लहलहायेंगे। पानी का स्तर सही रहेगा जिससे नदियों और तालाबों में पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहेगा।

यही समय है यदि हमने अभी पानी के बारे में सोचना नहीं शुरू किया तो वह समय भी नजदीक है जब हम इसे खो देंगे और यदि पानी खो गया तो पृथ्वी पर कोई नहीं बच पायेगा। इसलिये आज करे सो अब, अभी।

गॉव में जब हम किसी पशु को पानी पिलाते हैं तो पानी का बर्तन भरकर उसके सामने रख देते हैं जिसको कि पशु व्यर्थ कर देता है और पीता कम है अतः हमें ये भी सुनिश्चित करना चाहिए कि पशु की प्यास भी बुझे और साथ ही वो पानी को व्यर्थ नष्ट ना करें।

पशुओं को नहलाने में भी कंजूसी करें क्योंकि जब हम उनको नहलाने लगते हैं तो भूल जाते हैं की हमें पानी भी बचत करनी है ताकि नहाने से ज्यादा उनको पीने का पानी पहले मिले और वो जीवित रह सकें।

यदि पशुओं को नहलाने की जरूरत पड़े तो उनको किसी पक्की फर्श पर नहलायें ताकि जो पानी नीचे गिरे वो इकठ्ठा किया जा सके और उसे उन्हें पीने के लिए दिया जा सके। हो सके तो उनको पानी पिलाने के लिए एक बड़ा बर्तन बनाया जाय और उसमें पशुओं को पानी पिलाया जाए ताकि पानी व्यर्थ ना जाए।

पशुओं को हम किसी खेत या बगीचे में भी नहला सकते हैं ताकि पानी सिचाई के काम आ सके और उसका पूर्ण रूप से इस्तेमाल हो सके।

सरकार को भी सुनिश्चित करना चाहिए कि जब पानी की आवश्यकता ज्यादा हो तो वाटर पार्क, स्विमिंग पूल आदि न इस्तेमाल हो ताकि पानी की ज्यादा से ज्यादा बचत हो सके और यदि इनका इस्तेमाल करना भी है तो सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पानी को रीसायकल करके इसका फिर से इस्तेमाल हो। इस सबका किसी एजेंसी से टाइम पर ऑडिट भी हो ताकि सब नियमों का पालन करें।

मेरा तो मानना है कि पानी को राष्ट्रीय द्रव्य घोषित किया जाना चाहिए और इन सब पर कानून बने ताकि कोई भी पानी को व्यर्थ नष्ट ना करे और यदि करे तो उसे सजा भी कानून के हिसाब से मिले।

लोग जितना ज्यादा जागरूक होंगे उतना ही पानी बचेगा।

पानी भगवान का दिया हुआ वो जीवन है जिसे हम और कहीं से नहीं प्राप्त कर सकते हैं और यदि ये खत्म तो जीवन खत्म।

ये वो प्रसाद है जो पृथ्वी पर सीमित मात्रा में उपलब्ध है लेकिन हम उसे बचा कर और बढ़ा सकते हैं तथा अपनी आने वाली पीढ़ी को एक जीवन रूपी प्रसाद के रूप में छोड़ सकते हैं।

पानी बचाओ, पानी बचाओ और पानी बचाओ तभी हम आने वाले समय में इस कीमती पानी को देख पाएंगे वरना हमारा भगवान ही रखवाला है और शायद वो भी ना बचा पाए।

पृथ्वी पर जितना पानी होगा उतने ही पेड़–पौधे फलेंगे और फूलेंगे और हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तथा जो पशुओं, पक्षियों, पत्तियों, वनस्पतियों को भी फलने–फूलने में मदद करेगा।

इसलिए प्राणियों समझो कि "जल नहीं तो कुछ नहीं"।